International Journal of Enhanced Research in Educational Development, ISSN: 2320-8708
Vol. 1 Issue 6, Sept.-Oct., 2013, pp: (82-87), Available online at: www.erpublications.com

भारतीय संगीत और इसके सौन्दर्य तत्व

डॉ0 सुदेश कुमारी

असिस्टन्ट प्रोफेसर, संगीत तबला वादन
गोकुल दास हिन्दू गर्ल्स कालेज, मुरादाबाद

संगीत का माध्यम है नाद। उसके तीन रूप महत्वपूर्ण है: 1– वैज्ञानिक तत्व, 2– मनोवैज्ञानिक तत्व, 3– सौन्दर्यमूलक तत्व। वैज्ञानिक तत्वों ने नियमों का निर्माण किया है व उन्हें ही 'सत्' कहा जा सकता है। मनोवैज्ञानिक तत्वों का सम्बन्ध मानव प्रतिक्रिया से है। जिसे 'शिव मंगल' या 'चित्त' से जाना जा सकता है और सौन्दर्यमूलक तत्व का सम्बन्ध आनन्द से है। पाश्चात्य में इन्हीं तत्वों को 'सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम्' शब्दों से जोड़ा गया है और यही तत्व 'सत्य', 'चित' व 'आनन्द' के स्वरूप है। नाद का वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप तो दैनिक जीवन के नाद प्रयोगों से स्पष्ट हो जाता है। स्पीच और लेंग्वेज इसी पर आधारित है। जहाँ तक सौन्दर्य का प्रश्न है, संगीत में नाद का अस्तित्व ही इसके लिए प्रमुख विशेषता है। संगीत का माध्यम ही नाद है इसीलिए सौन्दर्य व संगीत अभिभाज्य है।

सौन्दर्य सम्बन्धी विचारकों के तीन वर्ग है–

एक वर्ग वह है जिसने सौन्दर्य मूलतः अपार्थिव माना है। इसमें प्लेटो प्लेटिनियम, संट आगस्टीन है। इनके कुछ निकट ही है हीगल व कांट के मत। हीगल ने सौन्दर्य को विषम चेतना की गोचर अभिव्यक्ति माना है और कान्ट के मतानुसार, सौन्दर्य निरपेक्ष तथा सापेक्ष है। दूसरे वर्गों के विचारकों के अनुसार, सौन्दर्य वस्तु का गुण है। यह वस्तु के रूप एवं आकार में निहित है। हर्वट के तो स्पष्ट कहा है कि अपने रूप के अतिरिक्त कोई अन्य आधार नहीं है। आस्कर वाईड तथा वपल्टर पेटर इत्यादि विचारकों ने माना है कि कला के सौन्दर्य का कोई अन्य प्रयोजन नहीं है। कला स्वयं में ही सिद्धि है। यह किसी अन्य प्रयोजन का साधन नहीं है। रूपवादी विचारकों ने सौन्दर्य के रूप की अभिव्यक्ति के लिये सुव्यवस्था, विविधता, एकरूपता, औचित्य, जटिलता, संगीत एवं संयम, स्पष्टता, कोमलता इत्यादि तत्वों को प्रधान माना है। प्रयोग के विचारक सत्ता के प्रतीक है जबकि रूपवादी इन्हें पार्थिव मानते हैं। तीसरे वर्ग के विचारक वे है जो सौन्दर्य को भाव की अभिव्यक्ति मानते हैं। सौन्दर्य को एक रागात्मक अनुभूति के रूप में स्वीकार करते है, इसलिए इस विचार का मनोविज्ञान से अधिक निकट का सम्बन्ध है।

जार्ज मौरिडिथ ने एक रमणी के सौन्दर्य की स्तुति करते हुए कहा कि "सुन्दर स्त्री की परमात्मा की ओर से संसार के लिए एक महान उपहार है।" परन्तु उस रमणी ने उत्तर देते हुए कहा कि "परमात्मा ने सुन्दर स्त्री से भी महान उपहार सुन्दर संगीत के रूप में दिया है।" यह एक वास्तविकता थी जो उस रमणी ने व्यक्त कर दी। सचमुच संगीत से अधिक सुन्दर उपहार संसार में ढूढ़ने पर भी मिलना कठिन है। संगीत में वह आकर्षण है जो दूर से भी जड़ और चेतना को अपनी ओर खींच लेता है। संगीत में वह मधुरता है जो पत्थर दिल को भी वश में कर लेती है। संगीत में वह रंजकता है जो प्रत्येक अवस्था में आनन्द विभोर कर देती है। मधुर वाणी

से हीन शारीरिक सुन्दरता नयनों द्वारा परखी जाती है जो समीप ही सम्भव है परन्तु वाणी की सुन्दरता को कान परखते है जो दूर स भी सम्भव है। मानव, पशु, पक्षी और देवता मधुर वाणी से प्रभावित होते है, शारीरिक सौन्दर्य से नहीं।

संगीत एक ऐसा सौन्दर्य है जो प्राणी मात्र एवं प्रत्येक प्रकार के जड़ और चेतन को तत्काल हो वश में कर लेता है और स्वार्थ का परित्याग कर परमार्थ की ओर आकर्षित करता है शारीरिक सौन्दर्य की परिभाषा क्या कही जा सकती है।प्रत्येक संसारी के पास सौन्दर्य को परखने के लिये अलग–अलग कसौटी है। संसार के प्रत्येक देश, प्रदेश, नगर, ग्राम में संसारी जीवों द्वारा अलग–अलग प्रकार से सौन्दर्य की परख की जाती है। अमेरिकन सौन्दर्य का स्तर बरतानवी स्तर से भिन्न है। बरतानिया फ्रांस से अलग मत रखता है। इसी प्रकार फ्रांस तुर्की से, तुर्की रूस से, रूस चीन से और चीन जापान से भिन्न मतवादी है। हम भारत में ही देख सकते है कि पहाड़ी सौन्दर्य स्तर मैदानी स्तर से कितना पृथक है, उत्तर, दक्षिण और पूर्व पश्चिम से कितना अलग है। सौन्दर्य की स्तुति करते हुए हम कह सकते हैं कि "A Thing of beauty is a joy forever-" भारतीय रस शास्त्र एक सम्पूर्ण विज्ञान हो जो अपने शांत श्रृंगार, करूण, वीर, हास्य, अदभुत, रौद्र, विभत्स और भयानक आदि नवरसों के स्थायी और संचारी भावों एवं विभावों द्वारा प्रत्येक प्रकार का आनन्दात्मक वातावरण उत्पन्न करने और व्यक्त करने में समर्थ है।

अब एक प्रश्न उठता है कि सौन्दर्य है कहाँ, कलाकृति में, श्रोता की अनुभूति में या रचनाकार के मन में। जो विचारक सौन्दर्य को विषयीगत मानते हैं व रचनाकार और श्रोता को महत्व देते है तथा जो सौन्दर्य को वस्तुगत मानते है, उनके अनुसार कलाकृति ही महत्वपूर्ण है परन्त एक सन्तुलित निष्कर्ष निकाले के लिए मध्यमवर्गी बनना पड़ता है। जहाँ एक और सौन्दर्य को ऐंद्रिक आत्मिक अनुभूति माना गया है, वहाँ दूसरी ओर यह कहा गया है कि यह ऐंद्रिक मानसिक प्रतीति है तथा एक तीसरी ही दिशा है, जिसमें सौन्दर्य को वस्तु का गुण माना गया। वस्तुतः सौन्दर्य वस्तु में भी है और मन में भी। इस विचार का बाज रूप कांट के सामजस्यवाद में पाया जाता है। इस मत का पल्लवन करिट, संटायना, कनिट इत्यादि ने भी किया है।

अतः सौन्दर्य को भली भाँति समझने के लिए कांट का सामजस्य रहता है, तभी कला जन्म लेती है। इसी सामजस्य से कला एक भौतिक रूप लेती है। इस भौतिक रूप का कलाकार के आन्तरिक सौन्दर्य से पूर्ण सामजस्य रहता है, तभी सौन्दर्यानुभति होती है। इस सामजस्य बोध के सिद्धान्त में ही सौन्दर्य की व्याख्या निहित है। इस सिद्धान्त के अनुसार सौन्दर्य कलाकार के मन में है, कलाकृति में भी है और ग्राहक के मन में भी है। ये तीनों सौन्दर्य स्थल अलग–अलग नहीं है। इनमें पूर्ण सामजस्य है और इसी सामजस्य में सौन्दर्य है। इस प्रकार इस सिद्धान्त के अनुसार केवल यह नहीं कहा जा सकता है कि सौन्दर्य व्यक्तिनिष्ठ है या केवल वस्तुनिष्ठ, बल्कि दोनों ही है। सौन्दर्य स्थूल भी है, आन्तरिक भी है और बाह्य भी। यह सौन्दर्य का निरपेक्ष रूप है, जिसे कांट ने निष्प्रयोजन प्रयोजनीयता के नाम से स्थापित किया है।

संगीत का यह सौन्दर्य सिद्धान्त वास्तव में राग का सौन्दर्य सिद्धान्त है। राग में भारतीय संगीत की सभी सौन्दर्य धारणाएँ समा गई है। कलाकार से तात्पर्य उस गायक या वादन से है जो राग का श्रव्य रूप प्रस्तुत करता है। राग प्रस्तुतिकरण कालकृति है और रागानुभूति श्रोता द्वारा प्राप्त आस्वाद है। यह प्रक्रिया सम्पन्न किस प्रकार होती है यदि इस पर विचार करें तो देखने में आता है कि गायक या वादन के आंतरिक राग सौन्दर्य का सामजस्य राग के स्थूल सौन्दर्य से होता ह तब राग प्रस्तुतिकरण की सुन्दर अवतारणा होती है। इसी सामजस्य में राग

सौन्दर्य की सृष्टि और अभिव्यक्ति होती है। इस सौन्दर्य अभिव्यक्ति में राग के स्थूल सौन्दर्य का पूर्ण सामजस्य होता रहता है। राग प्रस्तुतिकरण को पूर्ण स्थूल सौन्दर्य का रूप नहीं कहा जा सकता, क्योंकि संगीत में कलाकृति एक सम्पूर्ण तैयार वस्तु के रूप में प्रकट नहीं होती, वरन् एक–एक करके सौन्दर्य के स्थूल रूप क्रम उभर कर आते है और प्रत्येक स्थूल रूप का गायक या वादक के आन्तरिक सूक्ष्म रूप से संबंध बना रहता है कभी भी प्रस्तुतिकरण किसी भी क्षण उसके रचियता के अन्तर्मन से अलग नहीं हो सकता। इसका कारण है कि राग प्रस्तुतिकरण में स्थूल रचना ही सौन्दर्य सृष्टि है और यह क्रम सौन्दर्य सृष्टा जो गायक या वादक है से संपूर्ण रूप से जुड़ा रहता है। कविता या चित्रकला की कृति 'फिनिष्ड प्रोडक्ट' के रूप में आती है। उस कलाकृति के स्थूल सौन्दर्य का मूल्यांकन किया जा सकता है पर संगीत में सूक्ष्म व स्थूल रूप को अलग–अलग नहीं किया जा सकता।

इसीलिए स्वामी प्रज्ञानन्द जी ने कहा है कि 'A Raga is psychometrical object' जो प्रक्रिया कलाकार व रागाभिव्यक्ति में चलती रहती है, वह प्रक्रिया राग रूप व श्रोता के साथ भी चलती है। श्रोता के सम्मुख राग सौन्दर्य के रूप में आते रही है और स्थल सौन्दर्य रचना के हर क्षण का संबंध श्रोता से होता रहता है यही रागानुभूति है। इस राग का स्थूल सौन्दर्य और श्रोता के सूक्ष्म सौन्दर्य का अपूर्व मिलन होता है। यह कहा जा सकता है कि राग प्रस्तुतिकरण की सृजन क्रिया से ही श्रोता का संबंध स्थापित हो जाता है। किसी अन्य कला से ग्राहक का रचना क्रिया से इस प्रकार का सम्बन्ध नहीं हो सकता। सृजन प्रक्रिया और सौन्दर्यानुभूति प्रक्रिया के पीछे दोनों छोरों पर कल्पना और सहजानुभूति का प्राचुर्य रहता है।

सौन्दर्य का सम्बन्ध राग से प्रारम्भ से ही रहा है। अब प्रश्न यह उठता है कि राग की प्रस्तुतिकरण क्रिया में सौन्दर्य तत्व किस प्रकार किस क्रम में और किन–किन स्थलों पर उभरते है। सर्वप्रथम यह कि वह पृष्ठभूमि क्या है, जिस पर राग सौन्दर्य प्रक्रिया निर्मित होती है। प्रत्येक कला की एक पृष्ठभूमि होती है और राग प्रस्तुतिकरण की पृष्ठभूमि में जो तत्व है वह है– नादात्मक, कालिक, लयात्मक। राग के इस आधार को सौन्दर्य आधार के नाम से संबोधित करना उचित होगा। नाद का सौन्दर्य आधार तानपूरे की सुरावट द्वारा निर्मित होता है। काल का सौन्दर्य आधार किसी भी तला वाद्य द्वारा मूल ताल और लय की पुनरावृत्ति द्वारा होता है। राग प्रस्तुतिकरण के पहले गायक या वादक के मन में सौन्दर्य आधार पर सूक्ष्म रूप होता है। उसका बाहरी प्रोजेक्सन नादात्मक रूप से तानपुरे द्वारा और लयात्मक रूप किस ताल वाद्य द्वारा होता है। अतः सौन्दर्य आधार में स्थूल और सूक्ष्म का इस प्रकार समाजस्य होता है कि इसके बिना सौन्दर्य क्रम चल ही नहीं सकता। कलाकार के मन का सौन्दर्य आधार इस वाह्य सौन्दर्य आधार से एक रस हो जाता है इस सौन्दर्य आधार में निरन्तरता, मधुरता, अखण्डता, स्पष्टता, नैतिकता, नियमबद्धता आदि तत्वों से सौन्दर्य की एक पृष्ठभूमि तैयार होती है। अब इसो सौन्दर्य आधार के सहारे एक दूसरी सृजनात्मक राग सौन्दर्य की सृष्टि होती है।

सौन्दर्य आधार का रूप पुनरावृतिक है और इस कल्पित सौन्दर्य में विविधता है। इन दोनों में सामजस्य होता है इसी एकीकरण में राग सौन्दर्य निखर जाता है एक पृष्ठिभूमि के सहार सुन्दर रूपों की तहे सामने आती रहती है। प्रत्येक रूप उस पृष्ठभूमि में एकाकार होता रहता है और इसी में राग का सौन्दर्य है। इस प्रकार का सौन्दर्य आधार पाश्चात्य संगीत में नहीं है। स्वर सौन्दर्य और लय सौन्दर्य का राग प्रस्तुतिकरण में ताना बाना चलता रहता है। घरानों के रूप भी इस सोन्दर्य तत्व पर आधारित है।

स्वर सौन्दर्य का रूप तो उसकी निश्चित तारता में है जिसे हम Correct pitch कहते हैं। यद्यपि स्वरों की एक निश्चित तारता है परन्तु प्रत्येक स्वर के चारों ओर जो सौन्दर्य स्थल है उन्हें हेलो कहा गया है। उस सूक्ष्म सौन्दर्य का अहसास स्थूल सौन्दर्य के साथ होता रहता है। किस स्वर पर कण कला, ऊपर या नीचे का कण लगा, गमक से लिया गया, किसको मिड से लिया गया, यह सौन्दर्य का इतना सूक्ष्म रूप है कि इसे गणित, विज्ञान या शब्दों द्वारा नहीं समझाया जा सकता। तोड़ी का 'ग' मुलतानी के 'ग' से कैसे अलग हो गया, दरबारी 'ग' अड़ाना के 'ग' से कैसे भिन्न है, यह इस पर निर्भर करता है कि स्वर के हेलो का अवलोकन कैसे हुआ। स्वर पर पहुँचना ही नहीं उसका छोड़ना भी एक सूक्ष्म सौन्दर्य की प्रक्रिया है। रागों में स्वर एक ही तारता के होने पर भी इस सूक्ष्म सान्दर्य क्रिया में अंतर आ जाता है और तभी स्वर का सौन्दर्य और निखर जाता है। प्राचीन ग्रंथों मे जाति लक्षण, रागालाप के लक्षण, इसी सूक्ष्म स्वर सौन्दर्य पर हमारा ध्यान केन्द्रित करते हैं। अंश और न्यास स्वर, स्वर बहुत्व और अल्पत्व, तिरोभाव और अविर्भाव की क्रिया इत्यादि स्वर सौन्दर्य के प्रतीक है। इस प्रकार राग प्रस्तुतिकरण में स्वर सौन्दर्य के सूक्ष्म और स्थूल रूप आते रहते है। आरोहात्मक व अवरोहात्मक क्रिया सौन्दर्य का ताना बुनती रहती है। सौन्दर्य के इस सूक्ष्म प्रयोग की भिन्नता से घरानों का जन्म हुआ है। सबके स्वर लगाव का सौन्दर्य अपनी एक विशेषता है।

लय सौन्दर्य की सूक्ष्म क्रियाएँ भी इसी प्रकार स्थूल रूप लेती है। पृष्ठभूमि में जो काल और लय का आधार सौन्दर्य चलता रहता है उसी में नवीन लय वैचित्रय के सौन्दर्य रूप आते है। लय सौन्दर्य की तह एक के आगे एक आती रहती है। एक ओर लय सौन्दर्य और स्वर सौन्दर्य का आधार सौन्दर्य से सामजस्य व दूसरी ओर इनका आपस में अपूर्व संयोग भारतीय संगीत का मूल सौन्दर्य आदर्श है। अनेकता में एकता ही इस सौन्दर्य का प्रमुख गुण है।

राग में प्रमुख स्थल कौन सा है इस पर कई विद्वानों ने अपने मत दिये है। क्याल राईटर के अनुसार "संगीत का सौन्दर्य पूर्व ज्ञान व नवीनता के एकीकरण में है।" राग सौन्दर्य व्यवस्था एवं अव्यवस्था के भव्य का संधि स्थल है। इसी तत्व से राग का प्रत्येक स्वर जुड़ा रहता है। त्मकनदकंदबल मदजतवचल का सिद्धान्त इसी सौन्दर्य की ओर संकेत करता है। श्याम कल्याण में गांधार कम से कम सूचना का द्योतक है तो ऋषभ अधिकतम सूचना का। जौनपुरी में कोमल गंधार न्यूनतम सूचना देता है, क्योंकि उसके बाद ऋषभ का अस्तित्व अनिवार्य है। दरबारी में कोमल 'ग' अधिकतम सूचना का द्योतक है। अधिकतम और न्यूनतम सूचना के चयन में ही राग गायकी का सौन्दर्य निहित है।

कुछ विद्वानों के अनुसार संगीत की गतिशीलता व उसके कालिक सौन्दर्य में उसका सौन्दर्य आदर्श छिपा हुआ है। इसके कारण कोई राग एक साथ पूर्णकार में सुनाई नहीं देता बल्कि धीरे–धीरे सौन्दर्य का अनावरण होता है। आंशिक सौन्दर्यरूप उस पूर्णाकार में एकाकार हो जाता है।

आलाप मुखड़े में लीन हो जाता है और मुखड़ा सम में लीन हो जाता है। एक आलाप दूसरे आलाप में लीन हो जाता है और इस प्रकार काल सौन्दर्य का निर्माण होता है। भूत, भविष्य व वर्तमान की एक श्रृंखला बन जाती है। प्रत्यक्ष सौन्दर्य क्षणभर में अप्रत्यक्ष हो जाता है और आने वाले सौन्दर्य का रूप पहले से ही अन्तर्मन में एक अप्रत्यक्ष रूप ले लेता है। सृजन लेंगर के डनेपब पे जीम प्ंहम व िजपउम के अनुसार "मानव में जो नियमबद्धता और लयात्मकता है, उसी का सूक्ष्म रूप संगीत में लिता है। सौन्दर्य का यह रूप किसी अन्य कला में नहीं मिलता

International Journal of Enhanced Research in Educational Development, ISSN: 2320-8708
Vol. 1 Issue 6, Sept.-Oct., 2013, pp: (82-87), Available online at: www.erpublications.com

है। संगीत को इसीलिए MovingArt कहा गया है" और राग इसी काल और स्वर की पृष्ठभूमि पर एक गतिशील सौन्दर्य का अखण्ड रूप है।

कुछ विद्वानों ने संगीत का मूल सौन्दर्य उसके रूप और वस्तु के एकीकरण में माना है। उत्तर भारतीय राग प्रणाली में वस्तु और रूप को अलग नहीं किया जा सकता है। इसी अभिन्नता में राग सौन्दर्य निखरता है। संगीत के इसी सौन्दर्य रूप को Walter pater ने इन शब्दों द्वारा व्यक्त किया है–In the consummate moments the end is not distinct from the means the form from the matters the subject from the eÛpression schofehaver ने इसी सौन्दर्य स्थल की ओर संकेत करते हुए कहा है–AllArtAspire to the condition of music- Houslick ने भी इसी तथ्य क स्पष्ट करते हुए कहा है – FormAnd content cannot be separated since bothAre musical.

इसी एकीकरण का चरमोत्कर्ष उत्तरी संगीत के राग सौन्दर्य से अभिव्यक्त होता है। सौन्दर्य सृजन से अभिव्यक्ति, अभिव्यक्ति से अनुभूति के एकीकरण में ही राग सौन्दर्य मूल रूप है। भारतीय संगीत में किसको राग का वस्तु रूप कहें और किसको रूप। इसी अभिन्नता में उसका सौन्दर्य है जो अवर्णनीय है।

राग संगीत का वस्तु, घटना, कार्य और कार्य व्यापार से कोई सम्बन्ध नहीं है। शब्दों में निश्चित तथा स्पष्ट अर्थ का बोध होता है, लेकिन स्वर की प्रकृति में संदिग्धता बनी रहती है, इसीलिए ये सौन्दर्य अपनी एक नवीनता लिए हुए है। अधिकतर विद्वानों ने माना है कि भारतीय रागों में सौन्दर्य अपनी एक नवीनता लिए हुए है। अधिकतर विद्वानों ने माना है कि भारतीय रागों में सौन्दर्य बिन्दु तीन है 1– श्रोताओं में उत्कंठा का निर्माण करना, 2– अपेक्षित अवस्था तक बढ़ाना और 3– उत्कंठा का विसर्जन। इसी को Tension and Resolution के सिद्धान्त समझाया जाता है। सौन्दर्य के तीन रूप इन तीन स्थितियों में अलग अलग आकार बनाते हैं। राग के अलापों में उत्कंठा का निर्माण किया जाता है। मुखड़ा लेकर जब सम पर आते है तब उत्कंठा विसर्जन होता है। यही अपूर्ण सौन्दर्य स्थल है। अलापों में कौन सा स्वर या संगीत किस प्रकार उत्कंठा जगाती है, वही सौन्दर्य बिन्दु है। रानाडे के अनुसार 'स' 'म' एवं 'प' राग उत्कंठा के विसर्जन के सौन्दर्य स्थल है और इन स्वरों के निकटवर्ती स्वर उत्कंठा जागृत करने के सौन्दर्य स्थल है। मियामल्हार में शुद्ध निषाद पर न्यास की क्रिया उत्कंठा को चरम सीमा पर जागृत कर देती है, फिर उसका प्रयोग उत्कंठा विसर्जन सौन्दर्य स्थल बन जाता है। मारवा में कोमल, ऋषभ व अवरोहात्मक न्या भी उत्कंठा जगाने का सौन्दर्य स्थल है। श्याम कल्याण में तीव्र मध्यम का न्यास भी इसी प्रकार का सौन्दर्य बिन्दु है। ताल और लय में भी सौन्दर्य के ये रूप स्पष्ट होते है। लय में कोई विषम क्रिया उत्कंठा जागत करती है। फिर मूल लय का प्रयोग त्मेवसनजपवद का निर्माण करता है। तिहाइयों का प्रयोग भी उत्कंठा जागृत करता है, फिर सम पर आना एक अपूर्व सौन्दर्य का रूप साकार करा देता है। आरोहात्मक रूप उत्कंठा जागृत करता है। अवरोहात्मक रूप उसका विसर्जन। राग सौन्दर्य में अलाप के प्रत्येक रूप में इस सौन्दर्य की प्रतीति होती रहती है। मिड की समाप्ति भी विसर्जन सौन्दर्य का सूक्ष्म स्थल है। व्यवस्थित सौन्दर्य और सूचनात्क सौन्दर्य रूप आपस में ताने बाने बुनते रहते है। परिवर्तन और पुनरावृत्ति का सिद्धान्त भी सौन्दर्य तत्व से जुड़ी हुई मुखड़ा और बन्दिश की पुनरावृत्ति सौन्दर्य का एक रूप है। दूसरी ओर गायकी और नायकी का यह क्रम राम सौन्दर्य में एक अपूर्व आनन्द की अनुभूति को जगा देता है। राग की मुख्य स्वर संगतियों की पुनरावृत्ति में भी सौन्दर्य मूर्त होता रहता है।

सार

राग में सौन्दर्य अभिव्यक्ति समानता और विषमता के सन्तुलन में निहित है। विषमता के बीच में पुनरावृत्ति भी आवश्यक है। केवल पुनरावृत्ति से भी सौन्दर्य का उचित रूप प्रकट नहीं हो सकता। राग सौन्दर्य अनन्त है, असीम है। कभी सौन्दर्य तरंगें स्वर से स्फुटित होती है, कभी लय में, कभी गम्भीर हो जाती है, कभी चंचल कभी वक्र तो कभी सरल, कितने ही रंग बदलता है। कभी यथावत है तो कभी रंगीत हो जाता है। कभी तेज कभी धीरे, राग सौन्दर्य एक महासागर की तरह है और श्रोता उसका तट है। सागर से उठती तरल लहरें आकर सागर तट को भिगोंकर सरस कर जाती है। लहर कहाँ से उठती है पता ही नहीं चलता। एक के बाद एक लहर आती रहती है पर किन्हीं दो लहरों में भिन्नता समझना कितना कठित होता है। लहरों के अलग–अलग रहने पर भी एक निरन्तरता बनी रहती है। लहरें स्वरूप बदलती है पर सबकी सब तट को सरस बनाती है, यही है राग सौन्दर्य का स्वरूप आर संगीत का सौन्दर्य।

संदर्भ–सूची

1– जैन एल. वी– संगीत दर्शन, पृष्ठ सं0– 31, 35
2– गर्ग उमा– संगीत का सौन्दर्य बोध, पृष्ठ सं0– 45, 47
3– चक्रवर्ती इन्द्राणी – संगीत मंजूषा, पृष्ठ सं0– 102, 105
4– शर्मा वी.एस. – भारतीय संगीत का इतिहास, पृष्ठ सं0– 96, 98